International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 5, May- 2017, pp. 516~522
ISSN (o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

मूल्य–शिक्षण में अध्यापकों की भूमिका

डा0 सतनाम सिंह

एम0ए0 इतिहास, एम0एड0

एम0फिल (एजुकेशन)

एम0ए0 राजनीति शास्त्र

पीएच0डी0 (एजुकेशन)

मूल्यों का निर्धारण, मूल्यों का शिक्षण और मूल्यों का क्षरण आज का सर्वाधिक चिन्तनीय एवं विचारणीय विषय है। केवल शिक्षा ही नहीं जीवन का प्रत्येक पक्ष चाहे वह परिवार हो या विद्यालय राजनीति हो या धर्म – सभी मूल्यों की गिरावट से परेशान है किन्तु कारणों के मूल में बैठकर सुधार करने की पहल करने के बजाए एक दूसरे पर दोषारोपण कर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री मान बैठना आज का युग– धर्म बन गया है। मूल्य शिक्षा के अध्यापकों की भूमिका पर विचार करने से पूर्व समीचीन होगा कि पहले जान लिया जाये कि शैक्षिक मूल्य क्या है ?

शैक्षिक मूल्य :–

शैक्षिक मूल्य का तात्पर्य उन क्रियाओं से है जो शिक्षा के लिए मूल्यवान होती है। शिक्षा के लिए शिक्षक पाठ्यवस्तु का चयन करता है, शैक्षिक नीति निर्धारित करता है, पाठ्यक्रम का संगठन करता है, शिक्षण विधियों का चयन करता है, अनुशासन स्थापना हेतु उचित कदम उठाता है, इत्यादि। शिक्षक यह सब कार्य इसलिए करता है कि बालक की शिक्षा में यह सब तब उपयोगी एवं आवश्यक है, अर्थात् इन सबका मूल्य है। इन सबकी उपयोगिता को मूल्यवान समझकर शिक्षक एवं शिक्षार्थी इनकी प्राप्ति का प्रयास करते है ये ही शैक्षिक मूल्य है।

शैक्षिक मूल्यों के प्रकार :–

1. आत्मनिष्ठ मूल्य

2. वस्तुनिष्ट मूल्य

1. **आत्मनिष्ठ मूल्य :–** कुछ व्यक्तियों की धारणा है, कि शैक्षिक मूल्य आत्मनिष्ट होते है, उनके अनुसार मूल्य की कल्पना मानव मस्तिष्क की उपज है अर्थात वे आत्मनिष्ठ है। पाठ्यपुस्तक, शाला और शिक्षण के अन्य उपदानों का मूल्य विद्यार्थी और शिक्षक के लिए उनके उपयोगों पर निर्भर करता है। और वे ही मूल्य निश्चय करते है। मूल्य की कल्पना इसके विचार से मनुष्य शरीर या मन से सम्बन्धित है, जगत प्राणी के लिए न मूल्यवान है, न अमूल्यवान जब तक प्राणी उससे सम्बन्ध नहीं स्थापित करता है।
2. **वस्तुनिष्ट मूल्य :–** कुछ शिक्षाशस्त्री शैक्षिक मूल्यों को आत्मनिष्ठ न मानकर वस्तुनिष्ठ मानते है। उनका कथन है कि शैक्षिक मूल्य किसी वैयक्तिक विचार या अनुभव पर आधारित नहीं होते। मूल्य का तो वस्तु के बाह्य गुण के अनुसार निर्धारण होता है। अतः वे मूल्यों को वस्तुनिष्ट मानते है। उनके विचार से किसी वस्तु का मूल्य वातावरण पर निर्भर करता है। ब्रुबेकर महोदय ने शैक्षिक मूल्यों के लिए निम्न दो प्रकार बताये हैं :–

(अ) तात्कालिक मूल्य (Immediate Value)

(ब) व्यवहृत मूल्य (Remote Value)

(अ) तात्कालिक मूल्य :– जो मूल्य हमारी रूचियों, इच्छाओं एवं आवश्यकताओं को पूरा करते है। उन्हें तात्कालिक मूल्य कहते है। वे मूल्य केवल सम्बन्धित वस्तु से ही प्राप्त हो सकते है। किसी अन्य वस्तु से नहीं। उदाहरण के लिए किसी बालक की रूचि संगीत सीखने की है तो गायन य नृत्य में ही उसे मूल्यों की प्राप्ति होगी ।

(ब) व्यवहृत मूल्य :– जो मूल्य बुद्धि संगत इच्छाओं से सम्बन्धित होते है उन्हें बुद्धि संगत इच्छाओं से सम्बन्धित मूल्य कहा गया है। ये निम्न दो प्रकार के होते हैं।

(क) साधन – मूल्य (Instrumental Value)

(ख) साध्य – मूल्य (Intrinsic Value)

(क) साधन – मूल्य :– जिन मूल्यों से कोई कार्य सिद्ध होता है उन्हें साधन मूल्य कहते हैं। वे अपने उपयोग के कारण मूल्यवान होते हैं और इनसे कुछ अन्य मूल्यों की प्राप्ति होती है। उदाहरण के लिए यदि कोई बालक डाक्टर बनना चाहता है तो उसके लिए जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान तथा भैतिक विज्ञान का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है क्योंकि इनके द्वारा उसकी इच्छा की पूर्ति सम्भव होती है। चूंकि डाक्टर बनने के लिए ये आवश्यक साधन है अतः इनका मूल्य साधन – मूल्य कहलाता है।

(ख) साध्य – मूल्य :– ब्रूवेकर के अनुसार 'साध्य – मूल्य वे मूल्य है जो अन्य वस्तु के कारण नहीं वरन् स्वयं में अच्छे समझे जाते हैं। ये मूल्य अपने में पूर्ण होते हैं और किसी बाह्म वस्तु पर आश्रित नहीं होते। उदाहरण के लिए श्यामपट्ट कक्षा में विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है। इसलिए मूल्यवान है। श्यामपट्ट का मूल्य किसी अन्य वस्तु पर आश्रित नहीं है वरन् उसकी स्वयं की उपयोगिता पर निर्भर है।

उपर्युक्त दो प्रकार के अतिरिक्त एक तीसरे प्रकार के मूल्य की भी चर्चा की गई है। वह है सौन्दर्यात्मक मूल्य **(Aestherti Values)** शिक्षा के प्रत्येक मूल्य की अपनी एक विशेषता होती है। जिसकी रसानुभूति की जा सकती है अथवा जिससे आनन्द उठाया जा सकता है। जिस मूल्य से हमें आनन्द मिले वही सौन्दर्यात्मक मूल्य है। सौन्दर्यानुभूति में हृदय तथा भावना दोनों का स्थान है। कुछ विद्वानों का मत है कि गणित में भी आनन्द प्राप्त हो सकता है जो संगीत या चित्रकला में यह व्यक्ति की रूचि पर निर्भर करता है।

मूल्यों का शिक्षण और शिक्षक की भूमिका :– विद्यालयी पाठ्यचर्चा में वे सभी तत्व निहित होने चाहिए जो आवश्यक मूल्यों का पूर्ण रूप से संचार कर सकें। प्रत्येक शिक्षक को मूल्य शिक्षक बनना पड़ेगा। प्रत्येक क्रियाकलाप, इकाई और अन्तः क्रिया का परीक्षण मूल्य पहचान, मूल्य प्रसार, मूल्य प्रबलन और उसके पश्चात मूल्यों को अमली जामा पहनाने के लिए संतुलित और समुचित कार्यनीति सम्बन्धी निर्णयों के आधार पर निर्णय लेने चाहिए। इन मूल्यों को विद्यालयी लक्ष्यों,

स्टाफ और छात्रों की भागीदारी द्वारा विकसित अनुशासन का स्पष्ट उल्लेख करके प्राप्त किया जा सकता है। मूल्य निष्पादन के लिए दो पक्षीय संवाद, कल्याण सेवायें, जरूरतमंद छात्रों की सहायता, उपचारात्मक शिक्षण, पुनर्मूल्यांकन और निम्नतर उपलब्धियों वाले छात्रों को निरस्त ने करने का भाव आवश्यक है। इसके लिए ऐसी क्रियाओं की योजना बनानी होगी। जिनमें प्रत्येक छात्र की खेलकूदों, विद्यालयी क्रिया – कलापों और उनकी रूचियों से जुड़े कार्यक्रमों में पूर्ण सहभागिता सुनिश्चित की जा सके।

प्रारम्भिर स्तर :–

1. विद्यालयी सभा, समूह गायन, मौन एवं ध्यान साधाना का अभ्यास ।
2. पैगम्बरों, संतों और सभी धर्मों के धर्मग्रन्थों से जुड़ी रूचिकर कथाओं का वर्णन ।
3. खेलकूद तथा सामाजिक कार्यों के माध्यम से समस्त के प्रति सेवाभाव, प्रकृति प्रेम तथा 'कर्म ही पूजा है' का भाव पैदा करना।
4. उपर्युक्त विषयों विशेषकर राष्ट्रप्रेम पर आधारित नाटको तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन।

माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर पर :–

1. शिक्षक या अतिथि वक्ता द्वारा प्रातः कालीन सभी में ज्ञानयुक्त पुस्तकों एवं महान साहित्य के अंशों का वाचन एवं उपयुक्त संबोधन।
2. विश्व के मुख्य धर्मों की आवश्यक शिक्षा तथा धर्म दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन।
3. विद्यालय से छूटने के बाद तथा अवकाश के समय में समाज सेवा।
4. सामुदायिक गायन कार्यक्रम, राष्ट्रीय एकता शिविर, राष्ट्रीय समाज सेवा, एन.सी.सी. शिविर, स्काउट एवं गाइड कार्यक्रम और
5. उपयुक्त विषयों पर नाटक, परिसंवाद, सांस्कृतिक कार्यक्रम ।

पूरक सहयोग :–

यहाँ जिस उपागम का प्रयोग होगा उसके अन्तर्गत निम्नलिखित तत्व होंगे।

1. विभिन्न विषयों में निहित मूल्यों का महत्व बताना।
2. छात्रों को एक दूसरे से प्रश्न करने, साझेदारी करने और आपस में एक दूसरे का सम्मान करने के सुअवसर प्रदान करना।
3. कक्षायी शिक्षण में लोकतांत्रिक सिद्धांतों एवं प्रक्रियाओं के लिए अवसर देना।
4. स्त्री– पुरूष समानता, सामाजिक जातियों, वर्गों एवं धर्मों के प्रति समानता के भाव पर बल देना।
5. मानव अधिकार, बच्चों के अधिकार, पर्यावरण संरक्षण, स्वस्थ जीवन–प्रणाली आदि के महत्व को रेखांकित करना और।
6. कक्षा के वातावरण को मूल्यों के विकास के लिए तनाव मुक्त एवं लोकतांत्रिक बनाना

इन उत्तरदायित्वों के ईमानदारी के साथ निर्वहन के साथ–साथ अध्यापकों को अपने बालकों के समक्ष नायक (रोल मॉडल) के रूप में प्रस्तुत करना होगा। उन्हें अच्छे संप्रेषक और संदेशवाहक के रूप में अपने को सिद्ध करना होगा और विद्यार्थियों की विभिन्नता को ध्यान में रखते हुए उनकी आवश्यकताओं को पहचान कर उनके विकास में सहयोग करना चाहिए तथा सबसे महत्वपूर्ण बिन्दु यह है कि उन्हें अपनी कथनी और करनी को एक करना होगा उपदेशों के स्थान पर आचरण के माध्यम से विद्यार्थियों को शिक्षित करना सबसे कारगर उपाय सिद्ध होगा। मूल्यों के शिक्षण के साथ उनके संरक्षण एवं संवर्धन पर ध्यान देकर ही कोई अध्यापक अपने कर्त्तव्य के प्रति न्याय कर सकेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अल्तेकर, अनन्त सदाशिव : प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति, नन्द किशोर एण्ड ब्रादर्श, वाराणसी, 1955

अग्निहोत्री, प्रभुदयाल : शिक्षा की भारतीय परम्परा, आदर्श और प्रयोग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली, 2002

अग्रवाल, जे0सी0 : राष्ट्रीय शिक्षा नीति, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2003

अनील, सदगोपाल : शिक्षा में बदलाव का सवाल, ग्रंथ शिल्पी, नई दिल्ली।

आनन्द, खुशहाल चन्द : महात्मा हंसराज–जीवनी तथा जनसेवा की कहानी, डी.वी.वी. पब्लिकेशन, चित्रकूट रोड, नई दिल्ली, 2001

अवस्थी, एस. : आधुनिक परिप्रेक्ष्य मैं वैदिक शिक्षा, फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, बुच एम.बी. 1983–88, फर्स्ट वोल्यूम

बेस्ट, जॉन डब्ल्यू : रिसर्च इन एजूकेशन, प्रेन्टिस हॉल, न्यूयार्क, 1963

बुच, एम.बी.(स.) : ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, केस, एम.एस. यूनिवर्सिटी, बड़ौदा, 1974

बुच, एम.बी.(स.) : सेकेण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, सोसाइटी फॉर एजूकेशनल रिसर्च एण्ड डेवलपमेन्ट, 1979

बुच, एम.बी.(स.) : थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली 1987

बुच, एम.बी.(स.) : फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च

इन एजूकेशन, एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली 1991

बुच, एम.बी.(स.) : फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली 1995 (भाग प्रथम)

बुच, एम.बी.(स.) : फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली 2000 (भाग द्वितीय)